खुशी और हरी भौगोलिक प्रांत की परिकल्पना का अध्ययन जनपद मेरठ के विशेष संदर्भ में

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

भूगोल से पी.एच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशक

शोधार्थी

डॉ धीर सिंह

कुमारी गुलशाना

R No. **JVR- II/20/4058**

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग ज्योति विद्यापीठ

महिला विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान 2021

प्रस्तावना (Introduction)

प्राकृतिक वनस्पति एवं कृषि समस्त मानव प्रजाति एवम् जीव-जंतुओं के जीवन का आधार है।प्राकृतिक पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।
अर्थात् जीवन की कल्पना करना भी मुश्किल है।आदिकाल से लेकर आज तक कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था को एक आधारभूत संरचना प्रदान करती आ रही हैं। कृषि के अभाव में दितीय क्रिया-कलाप समाप्त हो जायेगें, जो किसी भी देश के लिए एक विशेष स्थान रखते हैं।

भारत की लगभग 72 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है एवं ग्रामों में निवास करती है। यह जनसंख्या कृषि कार्य से न केवल अपनी आजीविका चला रही है बल्कि देश के आर्थिक विकास में भी इसका सहयोग सहारनीय हैं।तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या ने

प्राकृतिक संसाधनों पर अपना दुष्प्रभाव डाला है।जो स्वयं मानव जीवन पर एवम् पर्यावरण पर नाकारात्मक प्रभाव डाल रही है।ओजोन परत का क्षरण प्राकृतिक पर्यावरण में मानवीय हस्तक्षेप का ही परिणाम है। बढता शहरीकरण एवम् औद्योगीकरण पर्यावरण हास का सर्वश्रेष्ठ कारण बना हुआ है जो किसी भी द्रष्टिकोण से सही नहीं है। कृषि में नई-नई तकनीकों के प्रयोग से जहा एक तरफ अर्थवयवस्था में कुछ हद तक सुधार हुआ है वही दूसरी तरफ यह मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए संकट बनीं हुईं हैं।

अध्ययन क्षेत्र एक प्रमुख औद्योगिक प्रदेश है जो कि प्रदूषण एवं जनसंख्या वृद्धि का शिकार है । आने वाले वर्षों में विधि बढ़ती जनसंख्या को कम नहीं किया गया तो इसके दुष्प्रभाव देखने पड़ेंगे। सरकार को जनसंख्या पर रोक लगाने के लिए कानूनों को सख्ती से लागू करना चाहिए। जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण का सबसे बड़ा शत्रु है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण वृक्षों का

कटाव करना पड़ता है जोकि तापमान में वृद्धि करता है ।जिससे मनुष्य अनेक रोगों का शिकार हो रहा है। चर्म रोग एक ऐसा ही रोक है जो पर्यावरण में छेड़छाड़ के कारण से उत्पन्न होता है।

•**मेंरठ की स्थिति एवम् विस्तार :** अध्ययन क्षेत्र जनपद मेंरठ उत्तर प्रदेश राज्य का एक प्रमुख कृषि प्रधान क्षेत्र हैं। आयताकार आकृति वाले इस जनपद की स्थिति 28°95" उत्तरी अक्षांश और 77°83" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 2522 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें 2345.11 वर्ग किलोमीटर ग्रामीण तथा 244.89 वर्ग किलोमीटर नगरीय हैं। जिसमें आवासीय क्षेत्र 493101 वर्ग किलोमीटर है। इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या 3443689 है, जिसमें पुरुष 1825743 तथा स्त्री 1617946 है। अध्ययन क्षेत्र एक प्रमुख औद्योगिक प्रदेश है जो कि प्रदूषण एवं जनसंख्या वृद्धि का शिकार है । आने वाले वर्षों में विधि बढ़ती जनसंख्या को कम

नहीं किया गया तो इसके दुष्प्रभाव देखने पड़ेंगे। सरकार को जनसंख्या पर रोक लगाने के लिए कानूनों को सख्ती से लागू करना चाहिए। जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण का सबसे बड़ा शत्रु है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण वृक्षों का कटाव करना पड़ता है जोकि तापमान में वृद्धि करता है ।जिससे मनुष्य अनेक रोगों का शिकार हो रहा है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 219 मीटर है जनपद की पूर्व से पश्चिम 93 किलोमीटर तथा उत्तर दक्षिण की औसत चौड़ाई 49 किलोमीटर है।जनपद में 3, तहसीलें 12 विकासखंड ,92 न्याय पंचायत, 459 ग्राम पंचायत,615 आबाद ग्राम तथा 52 गैर आबाद ग्राम स्थित है। जनपद की कुल साक्षरता प्रतिशत 72.84 है। जिसमें पुरुष साक्षरता सिर्फ 80.74 प्रतिशत है तथा स्त्री प्रतिशत 63.98 है । जनपद का लिंगानुपात 872 है जो कि बहुत कम है।

2. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature)

"समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में महत्वपूर्ण कारक है"

डॉक्टर अरविंद बी 0 फाटक

संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन समस्त पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबंध, ज्ञान कोषो तथा अभिलेखों आदि से है इन सभी के अध्ययन से अध्ययन करता को अपनी समस्या के चयन में परिकल्पनाओ के निर्माण, अध्यन की रूपरेखा तैयार करने एवम कार्य को आगे बढ़ाने में मदद मिलती है।

किसी भी क्षेत्र का साहित्य पुनरावलोकन उस साहित्य का आधार होता है यदि हम संबंधित साहित्य को सर्वेक्षण द्वारा परिपूर्ण करते हैं

तो उस साहित्य की नींव और भी दृढ़ रूप धारण कर लेती है उस साहित्य से संबंधित किया गया कार्य महत्वपूर्ण एवं प्रभावी होता है अथवा त्रुटि होने की संभावना कम होती है।

● प्रस्तावित अध्ययन के संदर्भ में पूर्ववर्ती अध्ययनों का मूल्यांकन (Review of Lecturer)

● प्रदीप चौधरी और विधि पी. तिवारी ने अपने एक रिसर्च पेपर "अर्बन ग्रीनरी टू आर्ट्स एनवायरमेंटल इंप्रूवमेंट एंड स्टेबिलिटी" चैप्टर 39 मे भारतीय शहरों सहित विकासशील देशों में व्याप्त भयावह शहरी प्रदूषित स्थितियों का वर्णन किया है।

● फेशियल कबीर के 1 जनरल पेपर "ए प्रपोजल रीजेनरेटिंग इन ढाका सिटी " के अनुसार पूरे ढाका शहर के

परिवेश को पुनर्जीवित करने के अवसर को देखते हुए "शहरी हरित नीति" लागू करनी चाहिए।

●डॉक्टर रेला के अनुसार रिसर्च पेपर "द रोल ऑफ हिस्टोरिकल प्लेस गार्डन ऑल द हेल्थ स्टेटस ऑफ कंटेंपरेरी अर्बन रेसिडेंट" मैं इन्होंने गार्डन के महत्व को सर्वोपरि बताया है। हरियाली मानव जीवन को बहुत रंगीन कर देती है उन्होंने इस शीर्षक के अंतर्गत अपने विचार व्यक्त किए हैं।

●जिम के "हाउ क्लाइमेट चेंज पेट स्पेशलिस्ट इन हैपिंग एट्टिट्यूड व्हाट द फंक्शनल बेनिफिट्स ऑफ अर्बन ट्रीज एंड ग्रीन स्पाइसिस्: लेसन फ्रॉम हांगकांग "के अनुसार जलवायु परिवर्तन से जुड़े भविष्य के मौसम सीमाओं की संभावनाओं

के लिए ग्रीन स्पेस संरक्षण रेखांकित करने वाले तर्क पर पुनर्विचार की आवश्यकता है और बदलती जलवायु से निपटने के लिए शहरी हरियाली आवश्यक है।

●प्रदीप चौधरी के "अर्बन हिंदी स्टेटस ऑफ सम इंडियन सिटीज: इन शार्ट कम्युनिकेशन" के अनुसार जिसमें उसने दिल्ली, बेंगलुरु, चंडीगढ़ जैसे शहरों के बारे में बात करते हुए कहां है कि शहरी पानी की शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक और सौंदर्य संबंधी लाभ के लिए शहरी समुदाय पारिस्थितिक तंत्र में और आसपास के पेड़ों और वन संसाधनों के प्रबंधन की कला विज्ञान और तकनीक है। पेड़ समाज के लिए परिदृश्य प्रदान करते हैं।

●थॉमस पैना गो प्लस के "अर्बन ग्रीन इन्फ्रा टेक्सचर: दी रोल ऑफ अर्बन एग्रीकल्चर इन सिटी लाइंस: नामक रिसर्च पेपर में लिखा है बिना हरियाली के शहरी लोग अपने जीवन के लिए अनेक जोखिमों का सामना करेंगे।

●करोलीना फर्नेंडीज बार बा के जरनल के अनुसार, "ग्रीन रूफ सिस्टम्स: ए स्टडी ऑफ पब्लिक एटीट्यूटस एंड प्रेफरेंसेस इन साउदर्न स्पेन "में लिखा है की हरियाली की कमी को पूरा करने के लिए छतों पर भी पौधारोपण किया जा सकता है। उन्होंने हर प्रजाति का एक अलग अलग प्रतिशत भी बताया है।

●रोबोट एन सी डोनाल्ड ने अपनी पुस्तक जिसका शीर्षक "द ग्रीन साउल ऑफ द कौन क्रिएट जंगल" में लिखा है कि शहरी सदी मानव समाज के कई पहलुओं को गहराई से बदल देगी । पिछली कुछ शताब्दियों में मनुष्य ने अभ्यास करने वाले शहरों का एक अच्छा सौदा किया है और सीखा है कि कैसे उचित शहरी नियोजन और और पर्याप्त बुनियादी ढांचा शहरी स्वास्थ्य दंड के अधिकांश भाग को संशोधित कर सकता है।

●प्रदीप चौधरी ने अपने "अर्बन ग्रीनरी टूवर्ड्स   एनवायरमेंट इंप्रूवमेंट एंड सस्टेनेबिलिटी" मैं लिखा है कि शहर की शहरी

हरित ढांचे द्वारा प्रदान की जाने वाली पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को न केवल चिकित्सकों व वैज्ञानिकों बल्कि राजनीतिक नेताओं, निर्णय- निर्माताओं और जनता को भी बड़े पैमाने पर बढ़ावा देना चाहिए।

●अमे हब के "ग्रीन आर्किटेक्चर: ए कांसेप्ट ऑफ स्टेबिलिटी" नामक शीर्षक में ग्रीन आर्किटेक्चर सभी वर्गीकरण के तहत पर्यावरण के अनुकूल वास्तुकला की समझ को परिभाषित करता है।

इस प्रकार अनेक वैज्ञानिकों, रिसर्च स्कॉलर्स आदि ने हमें हरियाली के महत्व को समझाने की कोशिश की है, जो हमारे आने वाली पीढ़ी के लिए भी लाभदायक है। हमें

अपने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है

3. परिकल्पना

परिकल्पना शब्द परि + कल्पना दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें परि का अर्थ चारों ओर तथा कल्पना का अर्थ चिंतन है। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से संबंधित समस्त संभावित समाधान पर विचार करना है परिकल्पना किसी भी अनुसंधान प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषिकरण के पश्चात उसमें कारणों एवं कार्य कारण संबंध से पूर्व चिंतन कर लिया गया है।

कुछ विद्वानों ने परिकल्पना को इस प्रकार परिभाषित किया है जोकि निम्न वत हैं।

1. मोले के अनुसार, "परिकल्पना एक धारदार अथवा तर्क वाक्य है, जिसकी स्थिरता की परीक्षा उसकी अनुरूपता उपयोग अनुभव अन्य प्रमाण तथा पूर्ण ज्ञान के आधार पर करना है।"

2. करलिंगर के अनुसार, “परिकल्पना का दो या दो से अधिक चरों के मध्य संबंधों का कथन हैं।"

3. मैकगुइन के अनुसार, “परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के कार्य क्षमता संबंधों का परीक्षण योग्य कथन है।"

उद्देश्य (Objectives):

1. अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न उद्योग स्थापित है जिनका प्रभाव मानव जीवन पर एवम् वनस्पति पर पड़ रहा है इसका अध्ययन विस्तृत रूप से शोध में किया जाएगा ।

2.अध्ययन क्षेत्र की मुख्य फसल गन्ने की पैदावार एवं गन्ने की फसल के कारण लोगों को गन्ना मिलों से अधिक मात्रा मे रोजगार प्राप्त हुआ है इसका अध्ययन शोध कार्य में विस्तृत रूप से किया जाएगा।

3. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन स्थल भी स्थित है जो जनाधिक्य का भी कारण बना हुआ है इसका अध्ययन शोध में विस्तृत रूप से किया जाएगा।

4.अध्ययन क्षेत्र में कृषि उत्पादन अधिक मात्रा में पैदा होता है जिसके कारण यहां विभिन्न प्रकार के व्यवसायों का क्रियान्वयन

Commented [L1]:

Commented [L2R1]:

किया जा रहा है इसका अध्ययन शोध में विस्तृत रूप से किया जाएगा ।

5. पर्यावरण संरक्षण से विलुप्त हो रहे वनस्पति प्रजातियों एवं वन्यजीवों को भी संरक्षण प्रदान किया जा सकता है।

शोध विधि:

मनुष्य के जीवन में किसी कार्य को तर्कपूर्ण ढंग से संपन्न करते समय एवं उस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए अति आवश्यक है कि उस कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व उसकी कार्यविधि शोध विधि सुनिश्चित कर ली जाए। अनुसंधानकर्ता किसी भी अनुसंधान को प्रारंभ करने से पूर्व विधि निश्चित करें ।

भूगोल अनुसंधान में तथा अन्य क्षेत्रों में भी उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान की अनेक विधियों का प्रयोग किया

जाता है ।किसी भी अनुसंधान में उस अध्ययन विधि एवं अध्ययन योजना का महत्वपूर्ण एवं प्रभावी स्थान होता है अथवा बिना कार्यविधि के अनुसंधान पूर्ण नहीं होता है। प्रयुक्त की जाने वाली कार्यविधि का चयन उस समस्या की प्रकृति एवं उसके समाधान हेतु आवश्यकता के प्रकार पर निर्भर करती है। चयन की गई विधियां सदैव अध्ययन विषय के अनुसार व्यवहारिक पूर्व नियोजित तथा बोधनीय होनी चाहिए।

दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि अनुसंधान विधि कार्य करने की एक विधि पूर्ण प्रणाली है जिसके माध्यम से परिणाम प्राप्त किए जाते हैं शोध कार्य प्रणाली में शोधकर्ता ने निम्न कार्य प्रणाली के अनुसार अध्ययन कार्य पूर्ण करना है

1.सर्वेक्षण विधि

2.न्यादर्श विधि

1.सर्वेक्षण विधि : किसी भी क्षेत्र में सुधार लाने के लिए हमें उस क्षेत्र की तत्कालीन परिस्थितियों की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। चाहे फिर वह क्षेत्र किसी भी प्रकार की समस्या से संबंधित हो अथवा क्षेत्र की समस्याएं सामाजिक स्तर पर हो एवं आर्थिक स्तर पर हो या अन्य किसी भी स्तर पर हो सकती है। सर्वेक्षण विधि किसी समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण विधि है। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करके अनुसंधानकर्ता सही एवं सटीक निष्कर्ष पर पहुंच सकता है। सामाजिक सर्वेक्षण में क्षेत्र सर्वेक्षण विधि उचित समझी जाती है।

2.न्यादर्श विधि: इस तकनीक से प्राप्त न्यादर्श को यादृच्छिक कहा जाता है। यह सुनिश्चित करने के लिए उचित ध्यान देना पड़ता है कि चुना गया न्यादर्श यादृच्छिक हो। मानवीय पूर्वाग्रह जो कि व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्न-भिन्न होता है, मनुष्य द्वारा क्रियान्वित किसी भी न्यादर्शन योजना में अन्तर्निहित होता है।

आंकड़ों का संग्रह:

आंकड़ों का संग्रह से तात्पर्य आंकड़ों को इकट्ठा करना होता है।किसी भी अनुसंधान को शुरू करने से पहले आंकड़ों का संग्रह किया जाता है। बिना आंकड़ों के संग्रहण के कोई भी अनुसंधान कार्य पूर्ण एवं स्पष्ट नहीं हो सकता है। अनुसंधान में आंकड़ों का विशेष महत्व होता है। आंकड़ों का संग्रह सांख्यिकीय विधियों की मदद से किया जा सकता है। आंकड़े दो प्रकार के होते हैं।

1. प्राथमिक आंकड़े

2. द्वितीय आंकड़े

यह एक शोधकर्ता पर निर्भर करता है कि वह कौन से आंकड़ों के संग्रहण से शोध कार्य पूर्ण करना चाहता है।आंकड़ों के अभाव में किसी भी शोध का विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

1.प्राथमिक आंकड़े:

प्राथमिक आंकड़े वे आंकड़े है जो प्रथम बार एकत्रित किए जाते हैं।प्राथमिक आंकड़े कहलाते है ।यह आंकड़े स्वम् सर्वे करके एकत्रित किए जाते हैं। इन आंकड़ों को अन्वेषक या गणनाकार द्वारा एकत्रित किया जाता है। सामान्यतः प्रत्यक्ष रुप से सर्वेक्षण द्वारा जो आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं ,वे प्राथमिक आंकड़े कहलाते हैं। जैसे जनगणना संबंधित आंकड़े, फसल उत्पादन की मात्रा संबंधित आंकड़े ,आदि।

2. द्वितीय आंकड़े:

द्वितीय आंकड़े उन्हें कहते हैं जो दूसरी बार उपयोग में लाए जाते हैं ।

जिनका पहले उपयोग हो चुका हो जो आंकड़े हम पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकालय से लेते हैं द्वितीय आंकड़े कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि प्राथमिक आंकड़े प्रथम बार प्रयोग में लिए जाते हैं जबकि द्वितीयक आंकड़े कितनी बार भी प्रयोग में लिए जा सकते हैं। अनुसंधान विश्लेषण हेतु प्रयुक्त आंकड़ों के संग्रह की दो विधियां हैं।

1.सेंसस या गणना विधि

2.सैपल या प्रतिदर्श विधि

7.अध्ययन योजना: -

(1). परिचय

(2). भौगोलिक अध्ययन

(3). कृषि एवं उद्योगों का अध्ययन

(4). जनसंख्या

(5). वन्यजीव अभयारण्य का अध्ययन

(6) सुझाव एवं निष्कर्ष